बुद्धिमानों को सारस की इस उक्ति पर विचार करना चाहिए कि प्रेमी चकई का प्राण इस भयानक वियोग की स्थिति में कैसे रह जाता है..

*चकई प्रान जु घट रहैं, पिय बिछुरंत निकज्ज।*
*सर अंतर अरु काल निसि, तरफ तेज घन गज्ज॥*
*तरफ तेज घन गज्ज, लज्ज तुवि वंदन न आवै।*
*जल बिहूँन करि नैंन, भोर किहि भाई दिखावै॥*
*हित हरिवंश विचारि, वाद अस कौंन जु बकई।*
*सारस यह संदेह, प्रान घट रहैं जु चकई॥* (स्फुट वाणी-५)
*सारस सर बिछुरंत कौं, जौं पलु सहै सरीर।*
*अगिन अनंग जु तिय भखै, तौं जाने पर-पीर॥*
*तौं जाने पर पीर, धीर धरि सकै वज्र-तन।*
*मरत सारसहि फूटि, पुनि न परचौं जु लहत मन॥*
*हित हरिवंश विचारि, प्रेम विरहा बिनु वा रस।*
*निकट कंत नित रहत, मरम कहा जानैं सारस॥* (स्फुट वाणी-६)

वियोग रस में निमग्न रहने वाली चकई सारस की उक्ति का खण्डन करते हुए कहती है कि हे सारसि! तूने यदि अपने प्रियतम के वियोग में कामाग्नि का पान किया होता तो सम्भव है तू मेरी प्रेम-पिड़ा को समझ सकती। इस प्रेम पिड़ा को अनुभव में लेने वाला मेरे जैसा कोई वज्र-तनु धारी ही हो सकता है। सारसी, तू तो प्रियतम से वियुक्त होते ही तत्क्षण अपना प्राण विसर्जित कर देती है, जिससे कहा जा सकता है कि तेरा मन प्रेम के वियोग पक्ष का अनुभव-शून्य है।

**सौ बातों की एक कहू तो–**

संयोग में वियोग का चिन्तन संयोगात्मक रस का वर्धन करता है। वियोग में संयोग का चिन्तन वियोगात्मक रस का वर्धन करता है। संयोग में संयोग और वियोग में वियोग का चिन्तन केवल तुलनात्मक स्थिती उत्पन्न करता है।

विरह प्रेम की 'परमोच्च' अवस्था है। ऐसी अवस्था जिसमें विरह का ताप स्वयंम् तक को भस्मीभूत कर देता है। जिसमें स्वयंम् की भी विस्मृति है, कुछ शेष है तो बस प्रेमास्पद। विरह का क्रंदन, प्रेम का एक मधुर नाद है जो किसी प्रेमी हृदय में ही गूंज सकता है। ऐसा नाद जो भीतर ही भीतर गूंजता हुआ सर्वत्र प्रियतम को ही दृष्टिगोचर करता है। मिलन की अवस्था में प्रियतम समक्ष हैं, परन्तु विरह की अवस्था में कण कण सर्वत्र प्रियतम की ही स्मृति बनी हुई है।

*विरह प्रेम की दसा होय विरह प्रेम कौ स्वाद।*
*विरह तरंग व्याकुल भरै पुनः उठै हिय उन्माद।।*
*भीष्म ताप हिय माँहिं उठै अश्रु जल सौं होय सींच।*
*प्रेम बेल नित्य विरह सौं बढ़े मचै ऐसो प्रेम कौ कीच।।*
*मिलन में पावै हिय प्रेम कौ आधो सूधो स्वाद।*
*विरह चटपटी जब लगै तबहुँ कछु हिय भरै उन्माद।।*

यद्यपि प्रेम की सर्वोत्कृष्ट भाषा मौन है।

अनादि काल से इसे कहा ही जा रहा है, और कहा जाता रहेगा, क्योंकि इसका चिन्तन भी रससिक्त करता है, हृदय को, मन को।

# असम का नाच

## धरती की बेटी, हवाएं और पूर्वांचल में नर्तन

-निधि सिंह

***सृष्टि में वृष्टि और वृष्टि में सृष्टि! यह हमारी संस्कृति के संस्करण का चक्र है। खुशियां क्या हैं? कैसे है और कितनी हैं? यह जानने के मूल में वृष्टि जन्य विरासत को देखना चाहिए। कृषिप्रधान देश के रंग और कहानियां भी खेती के आसपास ही घूमती है और खेती की फसलें ऋतु के आसपास। जीवन इससे अलग नहीं है। उसकी थिरकन और स्पंदन में ऋतुओं का रस व्यवहार ही होता है।***